International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023; 2(5): 58-61

Review Article

भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय संस्कृति की अवस्थिति

Author (s): सर्वेश यादव*[1]

[1]*शोधार्थी, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश*

Corresponding Author: * सर्वेश यादव

सारांश

इस समीक्षा लेख में वैश्विकीकरण की अवबोधना को गहराई से समझाने का प्रयास किया गया है जिसमें इसके विविध आयामों और प्रभावों को प्रकट किया गया है। इसका महत्वपूर्ण बिंदु है कि वैश्विकीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें सभी देशों के बाजार, वस्तुएं और जानकारी को एकीकृत करने और एक सांगठन में लाने का प्रयास होता है जिसके परिणामस्वरूप एक देश की वस्तुएं, व्यक्तियों और जानकारी को किसी दूसरे देश में किसी प्रकार की बाध्यता के बिना स्वीकार किया जाता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 25-08-2023
- **Accepted:** 21-10-2023
- **Published:** 30-10-2023
- **IJCRM:**2(5);2023:58-61
- **©2023, All rights reserved**
- **Plagiarism Checked**: Yes
- **Manuscript ID:** IJCRM:2-5-14
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

सर्वेश यादव. भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय संस्कृति की अवस्थिति. *International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.* 2023; 2(5):58-61.

कूटशब्द: वैश्विकीकरण, आर्थिक सहयोग, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, भूमंडलीकरण के प्रभाव, विश्वव्यापी सघटन

प्रस्तावना:

भूमंडलीकरण की अर्थवत्ता पर विचार करें तो यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि भूमंडलीकरण संसार के सभी देशों के बाजारों एवं वहाँ बेची जाने वाली वस्तुओं आदि का यूनिफिकेशन या एक हो जाना है। या यूं समझें कि किसी एक देश की वस्तुओं, व्यक्तियों व सूचनाओं आदि को किसी दूसरे देश में बिना किसी बाध्यता के स्वतंत्र रूप में मान्यता ही भूमंडलीकरण है। या भूमंडलीकरण के शाब्दिक अर्थ को समझें तो 'संसार के सभी देशों का एक सूत्र में बद्ध जाना है।' यह एक ऐसा स्वरूप है जिसके द्वारा विश्व व्यापार एक -दूसरे देशों के प्रति परस्पर सहयोगी एवं समन्वयक रहा है। संसार के सभी देशों की अर्थव्यवस्था के प्रति व्यापारिक क्रियाकलापों का अंतर्राष्ट्रीयकरण, भूमंडलीकरण के द्वारा निर्धारित हुआ। इसके कारण ही आपसी प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिला।

भूमंडलीकरण का दौर 20 वीं सदी के अंतिम दशक तक शुरू हो चुका था। भूमंडलीकरण का विस्तार आर्थिक स्तर से आगे सामाजिक व राजनीतिक स्तर तक फैल गया।इसके माध्यम से दुनिया के सभी लोग तकनीकी, संचार व बाज़ार के कारण एक दूसरे से परिचित हो रहे हैं। लोग एक दूसरे की संस्कृति, भाषा, साहित्य, रहन-सहन, खान-पान आदि को अपना रहें ,इसप्रकार सभी एक दूसरे से जुड़ते या एक होते जा रहे हैं। जैसा कि एक पत्रिका में संदर्भ मिलता है – "वर्तमान भूमंडलीकरण के समर्थकों का प्रमुख लक्ष्य है सारी दुनिया को एक रंग में रँगना यानी सब प्रकार की विविधताओं को मिटाकर समरूपता लाना।"[1] भूमंडलीकरण के कारण ही उदारीकरण, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार, तकनीकी विस्तार, विश्वव्यापार संगठन की स्थापना, विदेशी व्यापार में विस्तार आदि सम्भव हुआ।

भूमंडलीकरण का प्रभाव मुख्य रूप से पर्यावरण, कृषि, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, रोजगार के अवसर, औधोगिकीकरण आदि पर पड़ा और साथ ही अधिकांश संस्कृतियों पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। अन्ततः भूमंडलीकरण को बाज़ारवाद का द्योतक कहा जा सकता है क्योंकि की इसके पहले संस्कृति की पहचान व्यक्ति से होती थी परन्तु अब बाज़ार से हो रही।

बात करें संस्कृति या सभ्यता की तो संस्कृति जहाँ व्यक्ति की आंतरिक क्रियाकलापों या महसूस की जाने वाली क्रियाविधि का परिचायक है। बिल्कुल कंप्यूटर के सॉफ्टवेयर जैसा। और वहीं सभ्यता जो व्यक्ति की बाह्य रूप का परिचायक है। कंप्यूटर के हार्डवेयर की भाँति। परन्तु संस्कृति व सभ्यता वर्तमान परिवेश में एक -दूसरे का पर्याय समझा जाने लगा है। संस्कृति ही व्यक्ति को जीवन का अर्थ, जीने का तरीका व मनुष्यता के मार्ग पर प्रशस्त करती है। या यूं कहें कि संस्कृति ही मानव को मानव बनाती है। हमें हमारी संस्कृति ही धर्म व दर्शन के माध्यम से सत्य के निकट ला नैतिक मानव बनाने के साथ प्रेम, समरसता, शान्ति व सहिष्णुता का भाव सिखाती है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वप्राचीन संस्कृति की परिचायक है। जैसा की नागोरी जी लिखते हैं – "भारत की सभ्यता व संस्कृति विश्व की प्राचीन सभ्यताओं एवं संस्कृतियों में से एक है और विश्व की संस्कृतियों में उसका महत्वपूर्ण स्थान है।जिस समय संसार के अनेक देश अंधकारमय जीवन व्यतीत कर रहे थे, उस समय भारत को विश्व का गुरु माना जाता था।"[2]

भारतीय संस्कृति भी भूमंडलीकरण से अछूता नही रही परन्तु यह सदैव से अपनी प्राचीनता के साथ एक नवीन आवरण ईजाद करती रही है। इस कारण भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है कि किसी समय में रूढ़िवादी नहीं बनी बल्कि सदैव ही आधुनिकता की सहायक रही है। भारतीय संस्कृति की समन्वय शक्ति को लेकर प्रो. डोडवेल लिखते हैं - "भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है, जिसमें अनेक नदियाँ आकर विलीन होती रही हैं।"[2]

संस्कृति को परिभाषित करते हुए, जयप्रकाश नारायण जी नव-संस्कृति संघ ईजाद करने वाले समाजवादी दल के लिए कहें थे – "सहसा एक संस्कृति को समाप्त करके उसके भस्म पर हम दूसरी संस्कृति की रचना नहीं कर सकते। संस्कृति मरती नहीं, वह केवल रूपांतरित होती है और जो लोग संस्कृति को बदलने के प्रयास में हैं उनका कार्य केवल इस रूपांतरण की गति को तीव्र बनाना है।"[3]

हमारी भारतीय संस्कृति प्राचीनता, धार्मिक सहिष्णुता, उदारता, समन्वय शक्ति, विविधता व विश्वकल्याण की भावना आदि से ओतप्रोत रही है। इसके मूल में सामाजिकता, धार्मिकता, दार्शनिकता, कलात्मकता आदि का महत्व अक्षुण्ण रहा है।

आज भूमंडलीकरण के इस दौर में हमारी भारतीय संस्कृति की रहन-सहन पर पश्चिमी संस्कृति की कुछ-कुछ प्रभाव देखने को मिल रहा। जैसे संयुक्त परिवार प्रथा के स्थान पर परिवारों का सूक्ष्म-सूक्ष्म परिवारों में विभाजित हो जाना। बुद्धिवाद, विवेकीकरण, उपयोगितावादी विचारों के आने से कार्यों के प्रति आकांक्षा व विकास के प्रति आशा निरंतर बढ़ा है। धर्मनिरपेक्षता के आड़ में धर्म पीछे जाते दिख रहा व विज्ञान ने ज्ञान की अपेक्षित विकास यात्रा को कम कर भौतिकतावादी स्वरूप को विकसित किया। इस दौर में बहुत से नवीन क्रांतियों का जन्म हुआ और नई- नई चेतना जागृत हुई। महिलाओं को लेकर समाज में एक नई चेतना विकसित हुई। महिला सशक्तिकरण पर बल दिया गया। विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्विद्यालयों में शिक्षक, छात्र संबंधों में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा। और साथ ही भारतीय व्यवस्था विचार, ज्ञान व मूल्य से हटकर उद्योग प्रधान प्रवृत्ति के कारण सूचना आधारित होती जा रही।

भूमंडलीकरण ने हमारी भारतीय सोच जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" से ओतप्रोत थी उसे वर्तमान समय मे विद्यमान उद्योग प्रधान से प्रवृत्ति संकुचित करती जा रही । लोग दिन-प्रतिदिन आत्मकेंद्रित व व्यक्तिगत पहचान को लेकर कटिबद्ध होते जा रहे हैं। भारत के शहरीय क्षेत्रों में भूमंडलीकरण का प्रभाव अधिकाधिक दिखायी देने लगा है। यहाँ की वेशभूषा, रचनात्मकता, भाषाई व्यवहार, संगीत, स्त्री-पुरूष संबंध, परिवार के बड़े-बुजुर्गों व समाज

में बड़ों-छोटों के प्रति व्यवहार, बच्चों को गोद लेनें की प्रवृत्ति आदि अत्याधुनिक क्रियाशीलता को प्राथमिकता एवं फिल्मों के प्रति लगन व सामाजिक रीतिरिवाजों के प्रति विश्वास पर भूमंडलीकरण के प्रभाव को देखा जा सकता है।

सभी समुदायों में निरंतर उनके संस्कार, रीतिरिवाज व उनके निजी मूल्य बदलते जा रहें। लोग आधुनिक होने की होड़ में निरंतर अपनी कार्याधारित वर्णव्यवस्था को झुठलाते हुए जन्माधारित जाति को लेकर संघर्षरत होते जा रहें।या यूं कहे कि सभी प्रत्येक क्षेत्र में पुरोधा होना चाह रहे। जो राष्ट्र हित में बाधक सिद्ध हो सकता है। जैसा कि हजारी प्रसाद जी लिखते हैं – "समूचे भारतीय जन-समूह के इतने स्तर-भेद हैं कि उन सबका हिसाब रखना बड़े-से-बड़े धैर्यशाली के लिए भी कठिन कार्य है।एक विदेशी नृतत्ववेत्ता ने हैरान होकर कहा कि भारतवर्ष में एक भी ऐसी जाति नहीं मिली जो किसी न किसी दूसरी जाति की अपेक्षा अपने को बड़ी न मानती हो। फलतः यह समझना बड़ा कठिन है कि सबसे नीची समझी जाने वाली जाति कौन है। जन-जागृति यदि सचमुच हुई तो उसका सीधा अर्थ होगा इस स्तर भेद पर सीधी चोट।मनुष्य जब मनुष्य समझा जायेगा, उस दिन युग-युग के संचित संस्कारों को बड़ी ठेस लगेगी, भयंकर प्रतिक्रिया होगी और यदि उस महा-आघात को सहने योग्य तप और स्वाध्याय हमनें अभी तक संचय कर लिया तो इस गरीब देश का क्या होगा, सो नहीं कहा जा सकता।"[5]

आज भूमंडलीकरण के कारण भारतीय लोग अपने को वैभवशाली सिद्ध करने की होड़ में अपनी परंपरागत व मूल व्यवसाय 'कृषि' से निरंतर दूर होते हुए अन्य व्यवसाय अपना रहें। जिसके फलस्वरूप पलायन की समस्या सामने आती जा रही।वस्तु लेन-देन के स्थान पर भी मुद्रा का प्रयोग अधिकाधिक होने लगा है।

जिस भारतीय संस्कृति में "अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम।" को श्रेष्ठ गुण के रूप में आदर दिया जाता है उस संस्कृति में आज वृद्धाश्रमों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही। जिस संस्कृति में पति-पत्नी एक दूसरे के अर्धांगिनी होते है । और जहाँ पति ईश्वर तुल्य तो वहीं पत्नी गृह स्वामिनी या लक्ष्मी मानी जाती है। उस संस्कृति में आज पति-पत्नी सम्बन्धों में तनाव के कारण तलाक की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही या तलाकशुदा लोगों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है।

भूमंडलीकरण के कारण ही हमारी संस्कृति में स्त्रियां आधुनिक होने की दौर में शामिल हुईं पर उन्होंने अपनी स्वतंत्र अस्तित्व की नहीं बल्कि पुरूष वर्ग के साथ तुलनात्मक विमर्श शुरू किया। जबकि दोनों में केवल मनुष्यता को लेकर समानता हो सकता परन्तु प्रत्येक पहलु को लेकर नहीं। जिसके कारण ही वो आज तक संतुष्ट नहीं हो सकी। जैसा कि नारी जीवन के संदर्भ में महादेवी वर्मा जी लिखती हैं – "पुरूष का जीवन संघर्ष से आरम्भ होता है और स्त्री का आत्मसमर्पण से।जीवन के कठोर संघर्ष में जो पुरूष विजयी प्रमाणित हुआ उसे स्त्री ने कोमल हाथों से जयमाल लेकर स्निग्ध चितवन से अभिनन्दित करके और स्नेह प्रवण आत्मनिवेदन से अपने निकट पराजित बना डाला।"[5]

महादेवी वर्मा जी अपने एक निबंध में लिखती हैं – "मध्य और नवीन युग के संधिस्थल में नारी ने जब पहले-पहले अपनी स्थिति पर असंतोष प्रकट किया, उस समय उसकी अवस्था उस पीड़ित के समान थी, जिसकी प्रकट वेदना के अप्रकट कारण का निदान न हो सका हो। उसे असह्य व्यथा थी, परन्तु इस विषय में 'कहाँ' और 'क्यों' का कोई उत्तर न मिलता था। अधिक गूढ़ कारणों की छानबीन करने का उसे अवकाश भी न था, अतः उसने पुरूष से अपनी तुलना करके जो अन्तर पाया उसने उसी को अपनी दयनीय स्थिति का स्पष्ट कारण समझ लिया। ..... उसने निश्चय किया कि वह उस भावुकता को अमूल नष्ट कर डालेगी, जिसका आश्रय लेकर पुरूष उसे रमणी समझता है, उस गृह-बंधन को छिन्न-भिन्न कर देगी जिसकी सीमा ने उसे पुरूष की भार्या बना दिया है और उस कोमलता का नाम भी न रहने देगी जिसके कारण उसे बाह्य जगत् के कठोर संघर्ष से बचने के लिये पुरूष के निकट रक्षणीय होना पड़ा है।"[7]

आधुनिकतावादी नारी के संदर्भ में आगे महादेवी जी लिखती हैं – "आधुनिकता की वायु में पली स्त्री का यदि स्वार्थ में केन्द्रित विकसित रूप देखना हो तो हम उसे पश्चिम में देख सकेंगे।स्त्री वहाँ आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो चुकी है, अतः सारे सामाजिक बंधनों पर उसका अपेक्षाकृत अधिक प्रभुत्व कहा जा सकता है। उसे पुरूष के मनोविनोद की वस्तु बने रहने की आवश्यकता नहीं है, अतः वह चाहे तो परंपरागत रमणीत्व को तिलांजलि देकर सुखी हो सकती है।"[8] पर वास्तविकता कुछ और ही है – "पश्चिम में स्त्रियों ने बहुत कुछ प्राप्त कर लिया है, परन्तु सब कुछ पाकर भी उनके भीतर की चिरंतन नारी नहीं बदल सकी है। पुरूष उसके नारीत्व की उपेक्षा करे, यह भी उसे स्वीकार न हुआ, अतः वह अथक मनोयोग से अपने बाह्य आकर्षण को बढ़ाने और स्थायी रखने का प्रयत्न करने लगी। पश्चिम की स्त्री की स्थिति में जो विशेषता है उसके मूल में पुरूष के प्रति उसको स्पर्धा के साथ ही उसे आकर्षित करने की प्रवृत्ति भी कार्य करती

है।.....भारतीय स्त्री ने भी अपने आपको पुरुष की प्रतिद्वंद्विता में पूर्ण देखने की कल्पना की, परन्तु केवल इसी रुप से उसकी चिरंतन-नारी-भावना संतुष्ट न हो सकी। उसकी भी प्रकृति जन्य कोमलता अस्ति-नास्ति के बीच में डग-मगाती रही।"[1]

भूमंडलीकरण ने भारतीय संस्कृति की कोई-कोई परम्परा पर सीधा चोट किया है और उन्हें एक नई दिशा दे, उनमें आधुनिकता का संचार किया है। जैसे- ऑनलाइन वेबसाइट के माध्यम से वर या वधू ढूढना, समाज में अंतर्जातीय विवाह की स्वीकृति, बग़ैर फ़ेरे व मंत्रोच्चार के कोर्ट के माध्यम से शादी, दूसरे देश में शादी करने जैसी स्वीकृति आदि। भूमंडलीकरण जिसका सीधा सम्बन्ध अर्थवत्ता या बाज़ार से है इस कारण तार्किकता, संसाधन, बौद्धिकता, धर्मनिरपेक्षता आदि को बढ़ावा मिला है। जिसके फलस्वरूप भारतीय युवाओं की सोच व आवश्यकताएं बदली है वो धर्म, जाति, लिंग व क्षेत्र आदि से ऊपर उठकर आर्थिक विकास की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। अतः हम देख सकते हैं कि संचार व सूचना प्रद्योगिकी समस्त विश्व को एक सूत्र में बाँधता जा रहा।

निष्कर्ष:

भूमंडलीकरण अर्थवत्ता के रूप में सामने आ संसार के सभी देशों के बाज़ार का एकीकरण किया। बड़ों (कंपनी,उद्योग आदि) को और बड़ा तथा छोटों को अस्तित्वहीन बनाया और धीरे-धीरे सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक रूप से संसार के सभी देश को प्रभावित व एकसूत्री करने का कार्य किया। इस दौर में हमारी भारतीय संस्कृति अपनी प्राचीनता के साथ नवीनता को आत्मसात कर अपनी विशेषता के अनुसार विश्व के साथ समन्वय स्थापित कर, आज भी सर्वप्राचीन संस्कृति के रूप में प्रसिद्ध है।

सन्दर्भ:

1. आलोचना, सहस्त्राब्दी अंक 14,2003, पृ. – 165
2. डॉ. एस.एल. नागोरी , भारतीय संस्कृति ,पृ.- 03
3. वही, पृ.- 06
4. रामधारी सिंह दिनकर, अर्धनारीश्वर , पृ. -66
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल ,पृ. -20
6. महादेवी वर्मा, प्रतिनिधि गध- रचनाएँ, पृ. -216
7. वही, पृ.-226
8. वही, पृ.- 227
9. वही, पृ.- 228-229

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.